BEILLUSTRATED
+91 707 377 4252
0294 401 7090
care@beillustrated.com

ISBN 978-93-93997-14-2
9 789393 997142

# Certification of Publication

**This certificate is proudly presented to**

शिल्पा नागौरी, जितेन्द्र सिंह राव

.....

**who authored a chapter entitled**

जेंडर और विकास स्वयं सहायता समूहों (एसएसजी) की भूमिका

.....

**This chapter has been published in the edited Book title**
**"भारतीय समाज में सामाजिक समस्याएं"**
**with ISBN 978-93-9399-714-2 in the year 2022.**

Amrit

Publisher
Amrit Tigga

# भारतीय समाज में जेंडर और विकास

## Gender and Development in Indian Society

**डॉ. राजू सिंह**
सहायक आचार्य
समाजशास्त्र विभाग
विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान एवं
मानविकी महाविद्यालय
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)

**रिंकू परिहार**
शोधार्थी
समाजशास्त्र विभाग
विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान एवं
मानविकी महाविद्यालय
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)

## अनुक्रम

1. जेंडर और विकास की सामाजिक अवधारणा (डॉ. संगीता अठवाल).....5
2. भारतीय समाज में जेंडर सम्बन्धित असमानता (डॉ. दीपिका राय).....15
3. जेंडर असमानता और महिला श्रम (माया सेन) .....23
4. कृषि विकास में महिलाओं का योगदान (डॉ. उर्मिला मीना, डॉ. सांवल सिंह मीना, डॉ. सुमित्रा मीना).....27
5. जेंडर और विकास स्वयं सहायता समूहों (एसएसजी) की भूमिका (*शिल्पा नागौरी **जितेन्द्र सिंह राव) .....37
6. ग्रामीण महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका (अभिलाषा शर्मा)47
7. भारत में 'जेंडर बजटिंग' एवं महिला विकास (रिंकू परिहार, डॉ. बालूदान बारहठ)..55
8. शिक्षा और सामाजिक-आर्थिक विकास में लैंगिक असमानता (डॉ. मन्जु बोहरा) ..63
9. भारत में महिलाओं के खिलाफ हिंसा (अल्का रानी शर्मा) .....73
10. महिला शिक्षा: राजस्थान के संदर्भ में (डॉ. इंद्रा जैन, मंजुला, नयन कंवर चौहान)..83
11. वायु प्रदूषण का महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रभाव (अर्चना) .....89
12. महिला और स्वास्थ्य (डा. चन्द्ररेखा शर्मा).....95
13. जेंडर विकास में गैर सरकारी संगठनो की भूमिका (डॉ.महावीर कुमार जैन) .....101
14. महिलाओं की समस्याएँ और आधुनिक समाज (डॉ विनीता राजपुरोहित) .....115
15. विभिन्न युगों में नारी की स्थिति (डॉ. इन्द्र सिंह राठौड़) .....123
16. महिला सशक्तिकरण एवं वर्तमान कल्याणकारी योजनाएँ (डॉ. इंद्रा जैन, डॉ. प्रकाश चन्द्र, विक्रम सिंह सोलंकी) .....133
17. नारीवादी आन्दोलन में साइमोन दी बुआ का योगदान (डॉ. राजू सिंह) .....151
18. जेंण्डर व विकास में मीडिया की भूमिका (डॉ. विद्या मेनारिया) .....157
19. राजनीतिक क्षेत्र में महिलाएँ (सुमन पूनीया).....165
20. कॉरपोरेट जगत में महिलाओं का योगदान (डॉ. श्रुति टण्डन) .....171
21. नारीवाद और उतर आधुनिकता (गणेश चन्द्र अरोड़ा).....179

# 5. जेंडर और विकास : स्वयं सहायता समूहों (एसएसजी) की भूमिका

*शिल्पा नागौरी, **जितेन्द्र सिंह राव

स्वरोजगार एवं उद्यमिता विकास के माध्यम से आर्थिक स्वतंत्रता संवर्द्धन हेतु भारत सरकार में स्वयं सहायता समूहों का प्रावधान किया गया है। नवीं पंचवर्षीय योजना में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका को पहचान दी गयी है। नवीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत स्वयं सहायता समूहों के द्वारा महिलाओं को संगठित करने पर बल दिया गया है जिससे कि महिलाओं को सशक्त बनाया जा सके। आज सम्पूर्ण भारत में स्वयं सहायता समूह महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान कर रहे है, क्योंकि इन समूहों में कार्य करने से उनके स्वाभिमान, गौरव व आत्मनिर्भरता में वृद्धि होती है, परिणामस्वरूप महिलाओं की क्षमताओं में बढ़ोतरी होती है। अतः प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान में महिला सशक्तिकरण पर स्वयं सहायता समूह का प्रभाव देखना है। प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत राजस्थान में स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिला सशक्तिकरण की स्थिति, संबंधित साहित्यों की समीक्षा, SHG का महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव, ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक विकास व स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के फायदे व SHG की महिलाओं को सशक्त करने में भूमिका तथा सहायता समूहों की महिला विकास में आने वाले बाधक तत्व व चुनौतियों की चर्चा की गई है।

स्वयं सहायता समूह दिन-प्रतिदिन सामाजिक क्रियाकलापों का केन्द्र बिन्दु बनते जा रहे हैं एवं साथ ही महिलाओं को सामाजिक मंच प्रदान करते है ताकि महिलाएँ अपने स्वयं से संबंधित समस्याओं, मुद्दों एवं क्रियाकलापों के बारे में बोल सकें। ये महिलाओं के लिए एक ऐसा मंच प्रदान करते हैं जहाँ वे एकत्रित होकर अपने अनुभवों का आदान-प्रदान कर सकें। साथ ही अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करके उनकी समस्याओं की विवेचना एवं एक-दूसरे का अनुसमर्थन करके सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।

## स्वयं सहायता समूह की परिभाषा

स्वयं सहायता समूह गरीब लोगों के छोटे-छोटे स्वैच्छिक संगठन हैं जो परीयमान दृष्टि से सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़े युवा वर्ग विशेषकर महिलाओं पर केन्द्रित है। जिसे राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (NABRD) ने 1997 ई. में स्वयं सहायता समूहों को ग्रामीण गरीबों के छोटे आर्थिक रूप से पिछड़े समूहों के रूप में परिभाषित किया है।1

स्वयं सहायता समूह आपस में अपनापन रखने वाले एक समान अति सूक्ष्म व्यवसाय एवं उद्यम चलाने वाले गरीब लोगों का एक ऐसा समूह है जो अपनी आमदनी से सुविधाजनक तरीके से कुछ बचत करते हैं। जमा इस छोटी-छोटी बचत को समूह के